UGC Approved Journal
Research Link
Since March 2002
An International, Registered & Referred Monthly Journal :
Sanskrit Literature
Research Link - 165, Vol - XVI (10), December - 2017, Page No. 134-135
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782

# संस्कृत साहित्य में मानवीय गुण का स्वरुप : एक अध्ययन

***प्रस्तुत शोधपत्र में संस्कृत साहित्य में मानवीय गुणों के स्वरुप का अध्ययन किया गया है। वैदिक साहित्य से ही नीति का इतिहास शुरु होता है। संस्कृत साहित्य का नवीन दर्शन स्पष्ट है। हम परस्पर अच्छा व्यवहार करें, आचरण अपनायें। संस्कृत साहित्य ही हमें शिक्षा के उस आदर्श रुप का संदेश देता है। विद्या से विनय की सीख, सीख हमें संस्कृत से ही मिलती है। यह विनय मानवता का भूषण है, सबसे बड़ा गुण है। इन्हीं गुण आरण एवं व्यवहार से मानव सर्वोच्च एवं महापुरुष बनता है।***

**संतोष कुमार अहिरवार**

प्रस्तावना :

संस्कृत साहित्य समग्र भारतीयता का व्यापक तथा सजीव स्वरूप प्रस्तुत करता है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जीवन के ये चार पुरुषार्थ अथवा लक्ष्य हमारी परम्परा में स्वीकार किए गए हैं। साहित्य अथवा काव्य में प्रतिष्ठित किए गए हैं। मानवता को अपने नाम के सुफल पाने के लिए प्रवृत्त करने का उत्तरदायित्व संस्कृत साहित्य के कवियों ने निभाया है। ऋग्वैदिक कवियों की धारणा थी कि देवता केवल परिश्रमी लोगों की सहायता करते हैं, निन्दा करने वालों को वे परमनिन्दनीय मानते थे। संस्कृत साहित्य में भौतिकता से ज्यादा शील को सर्वश्रेष्ठ मानव गुण मानते हुए भाग्य, कर्म, विद्या तथा पुरुषार्थ पर विशेष बल दिया गया है। संस्कृत साहित्य में मानवीय एवं नैतिकता के अपूर्ण भण्डार हैं।

मानव के अन्तःस्थल में क्षण–क्षण में उत्पन्न होने वाले भावों के निरीक्षण एवं अभिव्यंजना में जिस कवि की वाणी रमती है, वही सच्चा कवि होता है। मनुष्य का हृदय परिवर्तनशील वस्तु है उसमें घृणा भक्ति का रूप धारण कर लेती है, अनुकम्पा से प्रेम की उत्पत्ति हो जाती है तथा प्रतिहिंसा से कृतज्ञता का जन्म होता है।

संस्कृत के काव्यों में हृदयपक्ष एवं कलापक्ष दोनों का यथावसर अपूर्व मिश्रण दृष्टिगोचर होता है। राष्ट्र की आत्मा को संस्कृत साहित्य ने अभिव्यक्त किया है। संस्कृत साहित्य में समग्र भारतीयता का व्यापक एवं सजीव स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। जगत के जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं के कारण इनको पुरुषार्थ नाम दिया गया है। जीवन के लिये धर्म की जरूरत है, उसके बगैर मनुष्य एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकता। संसार के सब काम–काज अर्थ अर्थात् धन पर निर्भर है। धन के बगैर संसार में जीवित नहीं रहा जा सकता है। काम मनुष्य की ही नहीं, सभी प्राणियों की आवश्यकता है। चौथा पुरुषार्थ मोक्ष है, मोक्ष अर्थात् मुक्ति जीवन तथा मरण का जो बन्धन है उसमें सदा के लिए छुटकारा पाने को ही मुक्ति कहा गया है। काव्य तथा नाटकों के रूप में संस्कृत ने समाज को यह नया संदेश दिया। कविता की वाणी में कही गई समाज की अपनी बातों को समाज ने भरपूर अपनाय। इस प्रकार संस्कृत का महान सन्देश हमारी संस्कृति के रूप में जीवित है।

संस्कृत साहित्य में हमें गुरु–शिष्य के आदर्श सम्बन्धों का ऊँचा संदेश मिलता है। संस्कृत साहित्य हमें सादे पर सच्चा तथा स्वतंत्र जीवन बिताने की सीख देता है। संस्कृत साहित्य ही हमें शिक्षा के इस आदर्श रूप का संदेश देता है, वह भले ही पुराना पड़ चुका है। विद्या से विनय की सीख हमें संस्कृत में ही गुण है। सत्य की धरती पर ही इस राष्ट्र की चेतना का जन्म हुआ। हमने सत्य को अपनाया है अपना आदर्श स्वीकार किया।

*सत्यमेव जयते नानृतम्।*

इस तरह संस्कृत साहित्य में सच्चाई का रास्ता बतलाता है एवं लोक कल्याण और विश्वमंगल का संदेश देता है। भारतीय काव्य में आदिकाल से ही कवियों का दृष्टिकोण रहा है! उसको संघटनात्मक कहा जा सकता है। उन्होंने धर्म के संरक्षण को दिव्य कर्म माना है जो कर्त्तव्य देवताओं के लिए सम्मत हुआ। वही मानव के लिए समीचीन माना गया है। इस प्रकार का कर्त्तव्य पथ अपना लेने पर मानव का भक्तित्व दिव्य बन जाता है। ऐसा भक्तित्व विकसित कर लेने पर मानव सारे समाज का अलंकरण बन जाता है। उसके द्वारा समष्टि की सेवा सम्भव होती है।

**(1) वैदिक वाङ्मय में मानवीय गुण का स्वरूप :**

वेदों ने हमें त्याग, तप तथा परोपकार का संदेश दिया है। ऋग्वेद का उदारता की अतिशय प्रशंसा करते हुए कहता है कि–

***जो अकेले खाता है, वो निरापापी है।*** [1]

*महात्मा गाँधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, जिला-सतना (मध्यप्रदेश)*

ऋग्वेद में कहा गया है कि– साथ मिलकर चलो, साथ बोलो, तुम्हारे मन सदा साथ विचार करें।

***सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्*** (2)

(2) रामायण :

महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में कर्मयोग का बीजारोपण किया है। उन्होंने तत्कालीन आदर्श नायक के जीवन की समीचीन दिशा बतलाई गई कि धर्म की रक्षा करने के लिए तन, मन और धन सम्पत्ति समर्पित कर देना चाहिए।

**(3) महाभारत :**

महाभारत में सदाचार की सर्वोच्च प्रतिष्ठा की गई है। इसके अनुसार मोक्ष पाने का प्रथम सोपान है– मन, कर्म और वाणी से किसी प्राणी के प्रति पाप न करना।

***यदा न कुरुते पापं सर्वभूतेषु कर्हिचित्।***
***कर्मणा, मनसा, वाचा ब्रह्म सम्पद्यते तदा।।*** (3)

इस प्रकार महाभारत के लोक कल्याण का ऊँचा स्थान मिलता है। व्यास का कहना है कि– कुल के लिए एक को, गाँव के लिए कुल को और जनपद के लिए गाँव को छोड़ देना ही कर्त्तव्य है। पुरूस्कार तो इस बात में है कि–

***"यदि किसी ने तुम्हारा उपकार किया है, तो तुम उसके लिये बढ़कर उपकार करो।"*** (4)

(4) श्रीमद् भगवदगीता :

गीता में कर्मयोग की जो विशद् धारा प्रवाहित की गई है, उसमें भारत के केवल काव्य को ही नहीं, अपितु सभी सांस्कृतिक क्षेत्रों को अद्वितीय ओजस्विता प्रदान की गई है। मानव को उसकी प्राकृतिक संकीर्णता से बाहर निकलकर उसे लोकहित में निरत करा देना गीता काव्य का अनुपम संदेश है।

***यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः।***
***आत्मन्येव च ससन्तुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते।।*** (5)

(5) महाभास :

महाकवि ने स्वप्नवासवदत्तम् नाटक में ने बड़ों के प्रति कृतज्ञभाव एवं उदार गुण को प्रकट किया है :

***गुणानां वा विशालानां सत्काराणां च नित्यशः।***
***कर्तारः सुलभा लोके विज्ञातारस्तु दुर्लभाः।।*** (6)

(6) महाकवि कालिदास :

महाकवि कालिदास ने प्रकृति का मानवीयकरण करके मानव को प्रकृति से शिक्षा लेने को कहा है, उन्होंने प्रकृति के मानवीय गुणों को प्रकट किया है।

***अनुभवति हि मूर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्णम्।***
***शमयति परितापं छायया संश्रितानाम्।।*** (7)

(7) महाकवि भारवि :

किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में जीवन की सफलता के लिए समुन्नत पथ का प्रदर्शन किया गया है :

***निरुत्सुकानामभियोगभाजाम, समुत्सुकेवाकमुपैति सिद्धिः*** (8)

**(8) महाकवि वाण :**

महाकवि वाण ने सर्वत्र स्नेह तत्व की प्रतिष्ठा की है। वाण का कहना है कि बलवती हि द्वन्द्वानां प्रवृत्तिः। इसी प्रवृत्ति का निदर्शन करते हुए बतलाया है कि– कड़वी बात बोलने वाले तथा मिथ्या कलंक ढूंढने वाले खल दुःख देते हैं, पर सज्जन अच्छी वाणी से पद–पद पर मन को मोह लेते हैं।

**(9) भर्तृहरि :**

मानवता की भावना को उच्चतम् स्तर पर उठाने का सर्वोपरी श्रेय भर्तृहरि को दिया जा सकता है। मनुष्य को जिन वस्तुओं का संग्रह करना चाहिए, वे हैं– "विद्या, तप, दान, ज्ञान, शील, गुण और धर्म इनके होने पर मनुष्य, मनुष्य है अन्यथा केवल पशु है।"

**(10) महाकवि माघ :**

महाकवि माघ ने सज्जन पुरुष के बारे में कहा है कि–

***महतीमपि श्रियमवाप्य विस्मयः।***
***सुजनो न विस्मरति जातु किंचन।।*** (9)

अर्थात् अतिशय श्री को पाकर भी गर्व रहित सज्जन किसी को थोड़ा भी नहीं भूलता। परोपकार को माघ ने सज्जनों का स्वाभाविक गुण माना है–

***"उपकारः स्वभावतः सततं सर्वजनस्य सज्जनः"*** (10)

(11) भवभूति :

महाकवि भवभूति अपने नाटक उत्तररामचरितम् में लोकाराधना का सर्वोच्च संदेश देते हैं। कवि ने अपने नाटक में राम से लेकर नदी, पर्वत, पशु–पक्षी तक सभी तल्लीन हैं।

श्रीराम के हृदय में जानकी के प्रति–

***वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।***
***लोकात्तराणां चेतांसि को नु विज्ञातुमर्हति।।*** (11)

उस समय का आदर्श राजा के लिए था–

***स्नेहं दयां च सौख्यं च मदि वा जानकीमपि।***
***आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा।।*** (12)

**निष्कर्ष :**

वैदिक साहित्य से ही नीति का इतिहास शुरू होता है। संस्कृत साहित्य का नवीन–दर्शन स्पष्ट है। हम परस्पर अच्छा व्यवहार करें। आचरण अपनायें। संस्कृत साहित्य ही हमें शिक्षा के उस आदर्श रूप का संदेश देता है। विद्या से विनय की सीख, सीख हमें संस्कृत से ही मिलती है। यह विनय मानवता का भूषण है, सबसे बड़ा गुण है। इन्हीं गुण आचरण एवं व्यवहार से मानव सर्वोच्च एवं महापुरुष बनता है।

***संदर्भ :***

*(1) ऋग्वेद–10/176.* ***(2)*** *ऋग्वेद–10/91.2.* ***(3)*** *महाभारत आदिपर्व–76.52.* ***(4)*** *महाभारत आदिपर्व–156.52.* ***(5)*** *गीता–3.17.* ***(6)*** *स्वप्नवासवदत्तम्–4.10.* ***(7)*** *अभिज्ञानशाकुन्तलम्–5.7.* ***(8)*** *किरातार्जुनीयम्–3.40.* ***(9)*** *शिशुपालवधम्–13.68.* ***(10)*** *शिशुपाल वधम्–16.22.* ***(11)*** *उत्तर रामचरितम्–2.7.* ***(12)*** *उत्तर रामचरितम्–1.12.*

***संदर्भ ग्रन्थ :***

*(1) महर्षि वेदव्यास : महाभारत।*

***(2)*** *महाकवि कालिदास : अभिज्ञानशाकुन्तलम्, प्रकाशक हंसा प्रकाशन जयपुर, संस्करण 2012.*

***(3)*** *महाकवि भास : स्वप्नवासवदत्तम्, प्रकाशक धर्मनीराजना, प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2010.*

***(4)*** *महाकवि भारवि : किरातार्जुनीयम्।*

❁ ❁